*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*

*Vol. X, Issue No. XX, Oct-2015, ISSN 2230-7540*

# नि:शस्त्रीकरण : मानवता को बचाने का अचूक अस्त्र

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

# नि:शस्त्रीकरण : मानवता को बचाने का अचूक अस्त्र

**Pardeep Kumar***

J.B.T. Teacher, Government Primary School, Nangal, District-Rewari, Haryana

*सारांश – मनुष्य ही मानवता का सबसे बड़ा शत्रु है। संघर्ष व युद्ध मानव स्वभाव का अंग है। लेकिन जब इनका कोई ठोस आधार नहीं हो तो ये मानवता के विनाश के कारण बनते हैं। युद्ध में विजय प्राप्त करने वाले पक्ष की तो जीत होती है लेकिन सम्पूर्ण मानवता की हार होती है। मानव सभ्यता का इतिहास युद्धों का इतिहास है। मनुष्य शक्ति व सत्ता प्राप्ति के लिए सदैव युद्धों का सहारा लेता रहा है। पाषाण युग से आधुनिक युग तक कि मनुष्य की विकास यात्रा में अनेक युद्धों का अस्तित्व रहा है। युद्धों ने शान्ति के विचार को कमजोर किया है। अन्ध राष्ट्रवाद युद्ध मे विश्वास करता है जबकि प्रबुद्ध राष्ट्रवाद शान्ति और मानव कल्याण को महत्व देता है। युद्धप्रिय राष्ट्र शस्त्रों के निर्माण व भण्डारण को प्राथमिकता देते हैं जिससे मानवता को खतरा उत्पन्न हो गया है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद शस्त्र निर्माता देशों ने शस्त्र बाजारों का मजबूती से विकास किया है व भारी मात्रा में परमाणु आयुध विकसित किए हैं जो सम्पूर्ण मानव विनाश के सूचक हैं। आण्विक शस्त्रों की होड़ ने मानव को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए सोचने को विवश कर दिया है। आज बुद्धिजीवी वर्ग ने नि:शस्त्रीकरण के द्वारा विश्व शान्ति के विचार को सुदृढ़ बनाने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रेरित किया है। तीसरे विश्वयुद्ध के खतरे से मानवता को बचाने के लिए शस्त्र नियन्त्रण तथा नि:शस्त्रीकरण के सिवाय हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। इस प्रकार नि:शस्त्रीकरण उस महाविनाश को रोकने का एक प्रयास है जो युद्ध के रुप में अभिव्यक्ति प्राप्त करता है और जो सम्पूर्ण मानवता का शत्रु है।*

*मुख्य शब्द – नि:शस्त्रीकरण, राष्ट्रवाद, मानवता, विभीषिका, शस्त्र नियन्त्रण ।*

----------X----------

## प्रस्तावना

नि:शस्त्रीकरण का शाब्दिक अर्थ है शारीरिक हिंसा के प्रयोग के समस्त भौतिक और मानवीय साधानों का उन्मूलन। यह एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य हथियारों के अस्तित्व और उनकी प्रकृति से उत्पन्न कुछ विशिष्ट खतरों को कम करना है। इससे हथियारों की सीमा निश्चित करने या उन पर नियन्त्रण करने या उन्हे घटाने का विचार ध्वनित होता है। नि:शस्त्रीकरण के प्रयास युद्ध को पूरी तरह समाप्त करने की कलात्मक आशा या एकदम आदर्श स्थिति तो प्रस्तुत नही करते लेकिन अनावश्यक युद्धों व शक्ति संतुलन बनाने के लिए उत्पन्न शस्त्रों की अन्धाधुन्ध होड़ को अवश्य खत्म करते हैं। मार्गेन्थाऊ ने नि:शस्त्रीकरण को परिभाषित करते हुए कहा है- ''शस्त्र दौड़ को समाप्त करने के उद्देश्य से विशेष या उसी प्रकार के शस्त्रों की समाप्ति या कटौती नि:शस्त्रीकरण कहलाती है।'' इस प्रकार नि:शस्त्रीकरण युद्ध सामाग्री तथा सैनिकों की संख्या में कटौती का पक्षधर है। मार्गेन्थाऊ के अनुसार, नि:शस्त्रीकरण पर विचार करते समय दो मूल भेदों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए वे हैं सामान्य और स्थानीय नि:शस्त्रीकरण मे भेद और मात्रात्कम व गुणात्मक नि:शस्त्रीकरण में भेद। सामान्य नि:शस्त्रीकरण से अभिप्राय है जिसमे सब राष्ट्र भाग लें। और स्थानीय नि:शस्त्रीकरण से अभिप्राय है जिससे सीमित संख्या में राष्ट्र भाग लें। इसी प्रकार मात्रात्मक नि:शस्त्रीकरण का उद्देश्य अधिक या सब प्रकार के शस्त्रीकरण में सम्पूर्ण कटौती है। 1932 में विश्व नि:शस्त्रीकरण सम्मेलन में उपस्थित अधिकतर राष्ट्रों का यह ध्येय था। दूसरी तरफ गुणात्मक नि:शस्त्रीकरण केवल विशेष प्रकार के शस्त्रों में कटौती या उन्मूलन का प्रयास है। अनिवार्य नि:शस्त्रीकरण युद्ध के उपरान्त हारे हुए राष्ट्रों पर लागू किया जाता है। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी पर ऐसा नि:शस्त्रीकरण लागू किया गया था। यदि राष्ट्र स्वेच्छा से अन्तर्राष्ट्रय सन्धियों द्वारा नि:शस्त्रीकरण स्वीकार करते हैं तो उसे ऐच्छिक नि:शस्त्रीकरण कहते हैं जैसे 1968 की अणु प्रसार निषेध सन्धि। व्यापक नि:शस्त्रीकरण को पूर्ण नि:शस्त्रीकरण भी कहते हैं। पूर्ण नि:शस्त्रीकरण का अर्थ है अन्ततोगत्वा ऐसी विश्व व्यवस्था ले आना जिसमें युद्ध करने के सारे मानवीय और भौतिक साधन समाप्त कर दिए गए हों। ऐसी विश्वव्यवस्था में कोई हथियार नही होगा और सेनाएं पूरी तरह भंग कर दी जांएगी। यद्यपि ऐसी आदर्श स्थिति आज के युग में एक मृगमरिचिका के समान है। बीसवीं शताब्दी को दो विश्व युद्धों का सामना करना पड़ा। दोनों बार युद्ध के तुरन्त बाद अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति की उत्कट् अभिलाषा ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों क्रमश: 'लीग ऑफ नेशन्स' तथा 'संयुक्त राष्ट्र संघ' को जन्म दिया। राजमृमज्ञों ने यह भी महसूस किया कि शस्त्रों के उत्पादन और प्रयोग को प्रतिबन्धित करके भी

www.ignited.in

शान्ति की सम्भवानाओं को प्रबल किया जा सकता है। यहीं से नि:शस्त्रीकरण के विचार का उदय हुआ।

## नि:शस्त्रीकरण की आवश्यकता, दर्शन एवं मानवता को लाभ-

नि:शस्त्रीकरण का आधुनिक दर्शन इस संकल्पना को लेकर चलता है कि मनुष्य लड़ते हैं, क्योंकि उनके पास हथियार हैं। इस धारणा से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि मनुष्य सब हथियारों का त्याग कर दें तो युद्ध होना असम्भव हो जाएगा। इनिस क्लाड का अभिमत है कि शस्त्रास्त्रों से राष्ट्र नेताओं को युद्ध में कूदने की प्रेरणा मिलती है। प्रथम विश्वयुद्ध का प्रधान कारण राष्ट्रों मे व्याप्त शस्त्रीय होड़ ही था। पहले अस्त्र-शस्त्रों का शक्ति संतुलन के नाम पर भण्डारण किया जाता है फिर सापेक्ष रुप से स्थिति सुदृढ़ होने पर अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण मानवता को युद्ध की विभीषिका में धकेल दिया जाता है। शस्त्र उत्पादन या खरीद पर अनाप-शनाप खर्च करके राजमर्मज्ञ जनता को उनका युद्ध में इस्तेमाल करके यह दिखाते हैं कि इस पर किया गया खर्च राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मामले पर था। मसलन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागाशाकी नगरों पर बम गिराये। इस बम के उत्पादन पर अमेरिका ने अरबों डालर व्यय किया था। बम का प्रयोग कर अमेरिकी शासकों ने अपनी जनता को परोक्ष रुप से यह दर्शाना चाहा कि खर्च किया गया धन व्यर्थ नही गया तथा विश्व शक्ति (सुपर पावर) बनने के लिए ऐसा आवश्यक था।

नि:शस्त्रीकरण को शान्ति का एक साधन समझा जाता है। नि:शस्त्रीकरण का प्रयोजन राष्ट्रों को युद्ध के साधनों से ही वंचित कर देना है। नि:शस्त्रीकरण दर्शन के अनुसार युद्ध का एकमात्र प्रत्यक्ष कारण शस्त्रों एंव हथियारों का अस्तित्व है। नि:शस्त्रीकरण का सिद्धांत इस सम्प्रत्यय पर खड़ा है कि शस्त्रों के कारण युद्ध न केवल भौतिक दृष्टि से सम्भव है, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी सम्भाव्य बन जाता है। शस्त्रों की होड़ से नए-नए खतरनाक और विध्वंसक हथियारों की खोज को बल मिलता है जिसका अन्तिम परिणाम युद्ध के रुप में निकलता है। विशेष रुप से हथियारों के प्रचुर संग्रहण ने मानव मात्र के समक्ष सुरक्षा का बुनियादी प्रश्न खड़ा कर रखा है। रासायनिक, जैविक और परमाणु हथियारों ने पूरी मानवता के समक्ष अस्तित्व का खतरा पैदा कर दिया है। यह शंका उस समय और प्रबल हो जाती है जब ये हथियार गलत हाथों में पहुंच जाएं। आई.एस.आई.एस. द्वारा उत्पन्न खतरा इसी प्रकार का है। उत्तरी कोरिया के तानाशाह द्वारा अमेरिका व दक्षिण कोरिया को आए दिन परमाणु बम के प्रयोग की धमकी सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरे की घंटी है।

राष्ट्रों में शस्त्र निर्माण की होड़ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा भंग करती है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढता है। विभिन्न राष्ट्रों में राष्ट्रीय हितों का टकराव स्वाभाविक तथ्य है। इस टकराव में शस्त्रीकरण आग में घी का कार्य करता है और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ाता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए हैडली बुल ने कहा है कि शस्त्रों की होड़ स्वयं तनाव की अभिव्यक्ति है। शस्त्र उत्पादन में असीमित संसाधन व्यय किए जाते हैं। विश्व के छोटे-बड़े सभी राष्ट्र अपने बजट का अधिकांश भाग राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर शस्त्रों के निर्माण एवं सैन्य सामाग्री जुटाने में खर्च करते हैं। वह विपुल धनराशि जो राष्ट्रों द्वारा विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण पर व्यय की जाती है यदि विश्व के अविकसित और पिछड़े देशों के विकास पर व्यय की जाए तो समूचे विश्व का रुप बदल सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति आइजन हावर के 16 अप्रैल 1953 के भाषण के कुछ अंश इसे और भी स्पष्ट करते हैं ''..... प्रत्येक बन्दूक जिसे बनाया जाता है, प्रत्येक युद्धपोत जिसका जलावतरण किया जाता है, प्रत्येक रॉकेट जिसे छोड़ा जाता है, अन्तिम अर्थों में उन लोगो के प्रति जो भूखे रहते है उन्हें खाना नही खिलाया जाता, जो ठिठुरतें हैं, किन्तु उन्हें वस्त्र नही दिए जाते - एक चोरी का सूचक है। यह संसार हथियारों में मात्र धन नही खर्च रहा है वरन् यह अपने श्रमिकों का पसीना, अपने वैज्ञानिकों की प्रतिभा और अपने बच्चों की आशा खर्च कर रहा है।'' दूसरे शब्दों में विनाशकारी कार्यों में व्यय किए जाने वाले इस धन को लोक-कल्याणकारी कार्यों में लगाकर पृथ्वी को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

नि:शस्त्रीकरण का इतिहास भी उतना ही पुराना है जिसना शस्त्रीकरण का जब से मनुष्य ने शस्त्र निर्माण और उनके प्रयोग की कला सीखी, साथ में अनके दुष्प्रभावों की चिन्ता भी सताने लगी। अत: आरम्भ से ही शासन या सत्ता की तरफ से नि:शस्त्रीकरण के बराबर प्रयार किए जाते रहे हैं। नि:शस्त्रीकरण का प्रथम प्रयास सैद्धान्तिक तौर पर 1648 ई. वेस्टफीलिया सन्धि से माना जाता है। यद्यपि प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व इस सम्बन्ध में अधिक सफलता नहीं मिली। इसलिए तो मार्गेन्थाऊ ने लिखा है कि ''नि:शस्त्रीकरण का इतिहास सफलताओं से अधिक असफलताओं का इतिहास है।'' ''लीग ऑफ नेशन्स'' के तत्वाधान में वाशिंगटन सन्धि (1922) और लंदन नौसेनिक सम्मेलन (1930) के माध्यम से नि:शस्त्रीकरण के प्रयास किए गए। बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सन् 1946 में अणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई। सन् 1952 में सयुंक्त राष्ट्र महासभा द्वारा नि:शस्त्रीकरण आयोग की स्थापना की गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के समय काल में परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाने हेतू -आंशिक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि' (1963), 'परमाणु अप्रसार सन्धि (1968), व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि (सी.टी.बी.टी.1996) प्रस्तुत की गई जिन्होंने नि:शस्त्रीकरण की भावना को कुछ हद तक लाभ पहुंचाया। किसी राष्ट्र के पास कितनी शक्ति है कितने हथियार हैं? इसका निर्धारण एक अति दुष्टकर कार्य है। शक्ति के किसी माप के अभाव में यह निर्धारित करना और भी दुष्कर है कि कौन सा राष्ट्र किस श्रेणी के कितने हथियार रख सकता है? राष्ट्रों के मध्य अविश्वास के भाव ने भी नि:शस्त्रीकरण को सफल नही होने दिया। राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रतिरक्षा ने भी राष्ट्रों को इसे अपनाने से रोक रखा है। राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता और विवादों ने भी नि:शस्त्रीकरण आंदोलन को कमजोर किया है। सैन्य विकास और



Pardeep Kumar*

तकनीकी प्रगति ने राष्ट्रों के मध्य अधिकाधिक अस्त्र-शस्त्र का संग्रहण और परमाणु प्रतिद्वन्द्विता को जन्म दिया है। शीतयुद्ध के दौरान अमेरिका-सोवियत संघ तथा वर्तमान में भारत-पाकिस्तान के मध्य यह स्थिति देखी जा सकती है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, रुस, इजराइल हथियारों के बड़े उत्पादक हैं। हथियारों की बिक्री से ये राष्ट्र प्रतिवर्ष भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित करते है। जब तक सैन्य औद्योगिक उत्पादन को प्रतिबन्धित नही किया जाता तब तक नि:शस्त्रीकरण आन्दोलन का सफल होना असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

आज जो राशि शस्त्रों के निर्माण पर खर्च हो रही है उसे जनकल्याण के कार्यों पर खर्च कर दिया जाए तो समस्त विश्व की कायापलट हो सकती है। विश्व में बढ़ रही भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी तथा अकाल जैसी समस्याओं का सफलतापूर्वक निदान किया जा सकता है। शस्त्र मनुष्य का पेट नही भर सकते और न तन ढांपने के लिए उसे कपड़ा दे सकते हैं। शस्त्रीकरण की इस होड़ से तीसरी दुनिया के विकासशील देशों के आर्थिक विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका के नव स्वतन्त्र देशों जो लम्बें काल के बाद औपनिवेशिक दासता से मुक्त हुए हैं, भी शस्त्रीकरण की दौड़ में फसंकर अपनी जनता की मूलभूत आवश्कताओं तक को पूरा नही कर पा रहें हैं। जब इन गरीब राष्ट्रों द्वारा शस्त्रीकरण पर असीमित व्यय किया जाता है तो स्वाभाविक है कि आर्थिक विकास की उपेक्षा होती है। मानव जाति के अस्तित्व को आज सबसे अधिक खतरा आणविक हथियारों से है। अत: नि:शस्त्रीकरण ही विश्व शान्ति की स्थापना व मानवता के कल्याण का सच्चा आधार हो सकता है। इसलिए आज विश्व के राजनेताओं, कूटनितिज्ञों, दार्शनिकों व वैज्ञानिकों को इस दिशा में सकारात्मक प्रयास करने चाहिए ताकि विश्व शान्ति का आधार मजबूत हो। तीसरे विश्वयुद्ध की सम्भावानाएँ क्षीण हों और मानवता की सुरक्षा व समृद्धि की गारण्टी प्राप्त हो।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

महेन्द्र कुमार (1984). अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्वान्तिक पक्ष, आगरा।

हेंस जे. मारगेन्थाऊ, - पॉलिटिक्स अमंग नेशन्स।

आर.एस.यादव, भारत की विदेश नीति: एक विश्लेषण, नई दिल्ली, किताब महल।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति - रोहतक एम.ए. (पूर्वार्द्ध) पुस्तक।

**Corresponding Author**

**Pardeep Kumar***

J.B.T. Teacher, Government Primary School, Nangal, District-Rewari, Haryana

**E-Mail –**